P.G.
SEM-III
Paper-13

"धूमिल और संसद से सड़क तक"
पूर्व से आगे

धूमिल रचित "नक्सलबाड़ी" शीर्षक कविता इस बात का उदाहरण है कि नक्सलबाड़ी आंदोलन ने धूमिल को भीतर तक आंदोलित किया था। यह कविता वर्णनात्मक न होकर सांकेतिक है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि इस वामपंथी उग्र उभार की असफलता के कारण क्षुब्ध है। उसे इस बात का क्षोभ है कि लोग दक्षिण पंथियों की तरफ है और वामपंथी का साथ छोड़ दे रहे हैं। इस कविता में कवि अनेक प्रश्न करता हुआ सत्य उद्घाटित करना चाहता है। वह दूसरे किसी प्रजातंत्र को ढूंढने का उपक्रम करता है। कवि का कथन है —

यह एक खुला हुआ सत्य है कि आदमी
दायें हाथ की नैतिकता से
इस कदर मजबूर होता है
कि तमाम उम्र गुजर जाती है भागते
सिर्फ बायां हाथ धोता है।

स्पष्ट है कि आज दायें हाथ की नैतिकता दैनिक जीवन व्यवहार में बहुत प्रबल है। आदमी हमेशा उसी के अधीन बने रहने के लिए विवश है। आदमी के दैनिक और नैतिक व्यवहार में दायें हाथ को ही प्रतिष्ठा मिलती है और बेचारे के बायें हाथ की स्थिति सदैव कमजोर रही है।

"पटकथा" संसद से सड़क तक की लंबी कविता है। यहाँ भारतीय नागरिकों की स्वातंत्र्योत्तर दशा, आकांक्षा, आशा-उद्योग और नियति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें आंतरिक जीवन और बाह्य जीवन का पूरा दृश्य उभरता है, नये मूल्यों और शोषण के क्रमों, मूल्यों की नीतियों और घातक व्यवहारों को रेखांकित किया जा सकता है। इस कविता में हिन्दुस्तान के माध्यम से देश की वस्तुस्थिति को नाटकीय धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। कान्य नायक की दृष्टि में अपना देश कैसा है? वह कहता है —

हिमालय से हिंद महासागर तक फैला हुआ
जली हुई मिट्टी का ढेर है
जहाँ हर तीसरी जुबान का मतलब
नफरत है, साजिश है, अंधेरा है।
यह मेरा देश है
और यह मेरे देश की जनता है।

चीनी आक्रमण के बाद की स्थिति का यहाँ वर्णन है। इस आक्रमण के बाद नफरत साजिश के अँधेरे से गुजरता हुआ मेरा देश जली हुई मिट्टी का देश दिखाई दे रहा था। जहाँ हरियाली सुख समृद्धि का नामो निशान नहीं था। यहाँ दो जुबान या भाषाओं के अतिरिक्त तीसरी भाषा का मतलब नफरत माना जाता था।

रघुवीर सहाय की कविताओं के संबंध में जो बात कही गयी है उसे धूमिल की कविताओं पर पूरी तरह लागू किया जा सकता है। धूमिल की कविताओं को पढ़ने से ऐसा लगता है कि हिन्दी यहाँ पहली बार विरोध के द्वार से संसद में प्रवेश करती है। सठोत्तरी कवियों में 'धूमिल' ऐसे कवि हैं जिसने अकविता से काव्ययात्रा आरंभ करके किसी अभिव्यक्ति की तलाश की ठोस जीवन संदर्भों और राजनीति के अनुभव का विषय बनकर अपने समकालीनों में सबसे अधिक स्वर और पाठकीय संवेदना को झकझोर देनेवाले मुहावरे प्रयोग करें। यही कारण है कि 'धूमिल' की अधिकांश कविताओं को सामाजिक राजनीतिक समस्याओं का ऐसा लंबा काव्यात्मक नाटक कहा जा सकता है जिसमें राजनीतिक चेतना से सम्पन्न गीत भरे पड़े हैं। लेकिन धूमिल की वैचारिक प्रतिबद्धता को मार्क्सवादी नहीं कहा जा सकता।

राजकमल चौधरी के बहाने कवि स्त्रियों के योनि धर्म के संबंध में अपने अनुभव विचार अभिव्यक्त करते हुए कहता है स्पष्ट है लोक बोध में योनी की सफलता संतान की उत्पत्ति की संभावना से जुड़ी हुई है। वही योनी सफल मानी जाती है जो संतान देने में समर्थ है। यही कारण है कि संतान देने की संभावना बनते ही, गर्भधारण होते ही औरतें उसे गंगा मैया का प्रसाद मानती है और गंगा मैया की प्रार्थना कर मंगलकामना करती है। पेट के अँधेरे में अर्थात् अपनी कोख में पल रहे शिशु के संबंध में स्त्रियाँ उड़द और अजवाइन के अंकुरित पौधों की तरह मन ही मन मनोकामना उगाती रहती है। शिशु जन्म के बाद भी विभिन्न संस्कारों द्वारा मंगलकामना का क्रम चलता रहता है।

कवि का कथन है कि जैसे लोकार्क कुंड की बनावट है वैसी ही योनीवाली सुहागिन स्त्रियाँ अपने मासिक धर्म की अवधि क्षीण करते ही सोहर गीत की पंक्तियाँ

में विशेष प्रकार का रसास्वादन करने लगती हैं। ऐसे रसास्वादन में उन्हें असीम आनन्द प्राप्त होता है। सोहर शिशु जन्म संबंधी गीत होते हैं। इसको पढ़ने या गाने से मासिक धर्म से मुक्ति पा जानेवाली स्त्रियाँ नए संदर्भों में इसे अनुभव करती हैं। उनकी जंघाओं का स्पंदन ऐसे गीत प्रसंगों में नया रंगीन सुखानुभव करता है। यहीं कवि धूमिल टिप्पणी करते हैं कि अब चौधरी नहीं रहा। अब यह सुखानुभव कैसे होगा।

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज
आरा